1. **समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल अपनाने से आई खुशहाली**

<table>
<tr>
<td>कृषक का नामः श्री जीवनराम पटेल<br>गांवः बूजेडा<br>ग्राम पंचायतः करोली<br>तहसिलः बीछवाडा जिलाः डूंगरपुर<br>मो. 7023070877 उम्रः 38 वर्ष<br>शिक्षाः 12 वीं</td>
<td> </td>
</tr>
</table>

श्री जीवनराम पटेल गांव बूजेडा, ग्राम पंचायत करोली, तहसील बिछीवाडा, जिला डूंगरपुर, राजस्थान के मध्यमवर्गीय किसान है। इनकी शिक्षा बारहवीं तक है तथा इनके पास स्वंय की 4 हैक्टर भूमि खेती योग्य है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण ये बारहवीं के बाद नही पढ़ सके और परिवार की आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए ये कुवेत करने चले गये। वहां पर भी ये सफल नही हो सके और वापस आकर अपने पिता के साथ मिलकर खेती करने लगे। इनके पास खेती योग्य पर्याप्त भूमि और सिचाई जल की सुविधा होते हुए भी खेती की नवीन तकनिकीयों की जानकारी न होने के कारण अधिक लाभ नही कमा पा रहे थे। पूरे परिवार द्वारा स्थानीय तरीके को अपनाकर खेती में लगे होने के कारण परिवार अपनी आर्थिक जरूरतों को भी पूरा नहीं पा रहा था। वे मक्का, चावल, गैहूँ, मूंग, उड़द चना और गन्ने की फसलों की स्थानीय किस्मों की बुवाई अपने खेत पर करते थे। उनके पास 2 भैंसे भी थी जो कि बहुत ही कम दूध देती थी। पांच वर्ष पूर्व उन्होने 7 संकर प्रजाति की गायें और 3 मूर्रा प्रजाति की भैंसे नाबार्ड की सहायता से बैंक ऑफ बडौदा, बिछीवाडा, जिला डूंगरपुर से 25 प्रतिशत छूट पर ऋण लेकर डेयरी प्रारम्भ की। परन्तु उचित कौशल के अभाव में वे इससे ज्यादा लाभ नही कमा सके। इस कारण वे इस क्षैत्र में प्रशिक्षण लेने के लिए संस्थानों की खोज करने लगे जिससे की वे अच्छी आय प्राप्त कर सके। पांच वर्ष पूर्व 2013 में श्री जीवनराम पटेल ने कृषि विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के संस्थागत प्रशिक्षण में भाग लेकर कृषि विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों से संपर्क किया। उन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा फसलों, सब्जियों, प्रसंस्करण और मूल्य सवंर्धन, पशुपालन, समन्वित कीट प्रबंधन एवं मुर्गीपालन पर आयोजित विभिन्न संस्थागत एवं असंस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रमों और किसान संगोष्ठियों, प्रक्षैत्र दिवस, प्रक्षैत्र भ्रमण, किसान मेलों और पशु उपचार शिविरों में भाग लिया। कृषि विज्ञान केन्द्र के मार्गदर्शन में उन्होने फसलों और सब्जियों की उन्नत किस्मों से खेती आरम्भ की तथा उन्होने अपने खेत पर वर्मीकम्पोट, अजोला इकाई और प्रतापधन नस्ल का मुर्गीपालन इकाई की स्थापना के साथ ही मक्का, सोयाबीन, मूंग, गेहूं, मिर्ची, भिण्डी आदि पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन भी आयोजित किये। वे कृषि विज्ञान केन्द्र के नियमित सम्पर्क में रहने लगे एवं कृषि के नवाचारों को अपनाया तथा समन्वित कृषि तकनिकों की जानकारी प्राप्त करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा संचालित व्हाट्सएप के भी सदस्य है। वर्तमान में नवीन तकनिकीयों को अपनाने और अपने प्रयासों, मेहनत और समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र और अन्य विभागों की तकनिकी सलाह के कारण उनकी आय तथा जीवन स्त्र में भी वृद्वि हुई।

श्री जीवनराम पटेल की सफलता को देखकर आसपास के गांवों में (करौली, गड़माला, हाथौड़, पाडली, और बिछीवाडा) किसान भी उनसे लाभकारी कृषि प्रणालियों और उन्नत पशुपालन की तकनिकों की जानकारी के लिए उनसे संपर्क कर रहे है।

टमाटर–मिर्च पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन

धनियां पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन

डेयरी इकाई

मुर्गी इकाई

**तालिकाः उन्नत कृषि प्रणाली के विभिन्न घटकों से श्री जीवनराम पटेल की औसत वार्षिक आय**

| क्र.स. | विवरण | औसतन वार्षिक आय (रू लाख में) |
|---|---|---|
| 1. | फसल उत्पादन | 2.00 |
| 2. | सब्जी उत्पादन | 0.60 |
| 3. | दुग्ध उत्पादन | 3.00 |
| 4. | मुर्गीपालन | 2.00 |
| 5. | वर्मीकम्पोस्ट | 0.50 |
| | **कुल आय** | **8.10** |

उन्नत तकनिकीयों अपनाने से पूर्व श्री जीवनराम पटेल के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। परन्तु वर्तमान में नवीन तकनिकीयों अपनाने के बाद वे न केवल अपने परिवार की जरूरतों को पूरा कर पा रहे है बल्कि अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दे रहे है तथा उनके खरीदने की क्षमता में वृद्वि होने के कारण उन्होने फ्रिज, एलसीडी टीवी, स्मार्ट फोन, मोटरसाइकिल, घास काटने की मशीन आदि उपकरण एवं कृषि यंत्र भी खरीदे है।

वर्तमान में वे विछीवाडा, डूंगरपुर, राजस्थान में प्रगतिशील कृषक के रूप में जाने जाते है तथा अन्य किसान उनका अनुसरण भी कर रहे है।

श्री जीवनराम पटेल भाकृअनुप–कृषि तकनिकी अनुप्रयोग संस्थान, जोधपुर की परियोजना में एक अग्रणी किसान के रूप में कार्य किया है एवं नवीनतम तकनिकों को साथी किसानों को सिखा कर कृषि प्रसार में मदद कर रहे है। वह कृषि विज्ञान केन्द्र में आयोजित किये गये प्रशिक्षणों में किसानों के लिए एक मास्टर ट्रेनर की भूमिका भी अदा कर रहे है।

## 2.समन्वित कृषि प्रणाली से पायी समृद्धि

| | **कृषक महिला का परिचय** | |
|---|---|---|
| | **नाम** | श्रीमति शान्ता पटेल पति श्री सुरेश पटेल |
| | **निवासीः** | माड़ा (टेम्बाफला ) |
| | **शिक्षा** | 10 वीं |
| | **आयु** | 33 वर्ष |
| | **तहसील** | डूॅगरपुर |
| | **जिला** | डूॅगरपुर |
| | **मोबाइल नं.** | 09460020435 9602120165 |
| | **आधार नं.** | 203921693491 |
| **कृषि भूमि** | | 7.4 हैक्टर (17.29 एकड) (शष्य फसलें –5.0 हैक्टर ), सब्जी उत्पादन – 2.0 हैक्टर , चारा उत्पादन –0.4 हैक्टर |
| **कृषि अनुभव** | | 11 वर्ष |

श्रीमति शांता पटेल पत्नि श्री सुरेश पटेल, 10वी पास, गांव– माड़ा टेम्बा, जिला – डूंगरपुर, राजस्थान की रहने वाली है। सात वर्ष पहले श्रीमति शांता पटेल, मक्का, चावल, गैहूँ, मूंग, उड़द चना और गन्ने की फसलों की स्थानीय किस्मों की बुवाई अपने खेत पर करते थे। उनके पास 3 भैंसे थी जो कि बहुत ही कम दूध देती थी। पूरे परिवार द्वारा स्थानीय तरीके को अपनाकर खेती में लगे होने के कारण परिवार अपनी आर्थिक जरूरतों को भी पूरा नहीं पा रहा था। वर्ष 2010–11 में कृषि विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों से चर्चा कर प्रशिक्षण में भाग लिया। तथा अपने खेत पर पहली बार कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाकर गेहूं एवं चना फसल का उन्नत बीज प्राप्त किया। साथ ही संमन्वित कृषि प्रणाली को अपनाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र से समय समय पर सलाह ली। के. वी. के. डूंगरपुर पर फल–सब्जी व फसल उत्पादन तकनिकीयों, डेयरी फार्मिंग, इत्यादि पर प्रशिक्षण प्राप्त कर 7 हैक्टर भूमि पर संमन्वित कृषि प्रणाली प्रारम्भ की। विभिन्न फसलों एवं सब्जियों के उन्नत बीजों / संकर बीजों को अपनाया।

**कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद कृषक महिला दृारा अपनाई गई वैज्ञानिक पद्वतियां / विधियां :–**

- उन्नत किस्म की फसल व सब्जियों के बीज का चुनाव।
- प्लास्टिक मलचिंग – सब्जी उत्पादन
- उन्नत नस्ल के दुधारू पशुओं का चुनाव।
- सिंचाई की सुक्ष्म पद्वतियां– ड्रिप व स्प्रिंक्लर विधि।
- वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन इकाई।
- जल संधारण (फार्म पौन्ड) ।
- उन्नत कृषि उपकरण व ट्रेक्टर।
- रेज बैड़ नर्सरी प्रणाली।
- भूमि का समतलीकरण।
- सब्जीयो की ग्रेड़िंग व पैकिंग एवं मार्केटिंग।
- वैज्ञानिक विधि द्वारा डेयरी पशुओं का रखरखाव।
- सुविधाजनक संसाधनों की स्थापना जैसे – गोदाम, पैकिंग हाउस व फार्म फेंसिंग।

श्रीमति शांता पटेल ने 4.6 हैक्टर क्षेत्रफल में विभिन्न फसलें – मक्का, धान, उड़द, सोयाबीन, गेंहु, एवं चना और 2.0 हैक्टर क्षेत्रफल में सब्जी उत्पादन – भिण्डी, टमाटर, बैंगन, अदरक, हल्दी, एवं रतालु, व 0.4 हैक्टर क्षेत्रफल में हरा चारा फसल तथा उन्नत नस्ल की 7 मुर्रा भैंस एवं 3 गिर गाय से संमन्वित कृषि प्रणाली मॉड़ल तैयार किया। समय समय पर फसलों व सब्जियों में कीट – बीमारियों की रोकथम के लिए के. वी. के. के वैज्ञानिकों की सलाह से कीटनाशकों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। लागत कम करने हेतु केचूआ खाद निर्माण कर उपयोग एवं अन्य जैविक खाद जैसे एजोटोबेक्टर, पी.एस.बी., राजोबियम एवं धान फसल में अजोला का प्रयोग कर रासायनिक खादों का सन्तुलित प्रयोग, जैविक कीट एवं फफुंदनाशी जैसे पंचगव्य, नीम तेल, खटटी छाछ, ट्राइकोडरमा इत्यादि का प्रयोग किया। श्रम व जल बचाने हेतु कृषि विभाग द्वारा अनुदानित बुन्द–बुन्द सिंचाई विधि अपनाकर सब्जी उत्पादन किया।

**टमाटर में धनिया व पालक की इन्टरक्रोपिंग**

**बैंगन में धनिया की इन्टरक्रोपिंग**

**गोभी में चुकुन्दर व मूली की इन्टरक्रोपिंग**

**हल्दी के साथ पालक की इन्टरक्रोपिंग**

**भिण्ड़ी के साथ पालक की इन्टरक्रोपिंग**

प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक मुनाफा कमानें हेतु संमन्वित कृषि प्रणाली में नये नवाचार किये जैसे 1.टमाटर फसल के साथ इन्टर कॉपिंग (हरा धनिया +पालक), 2. बैंगन के साथ इन्टर कॉपिंग (हरा धनिया), 3. पत्तागाभी के साथ इन्टर कॉपिंग (चुकन्दर + मुली), 4. हल्दी के साथ इन्टर कॉपिंग (हरा धनिया), 5. भिण्डी के साथ इन्टर कॉपिंग (पालक) लेकर खेत स्तर पर आय वृद्धि की गई।

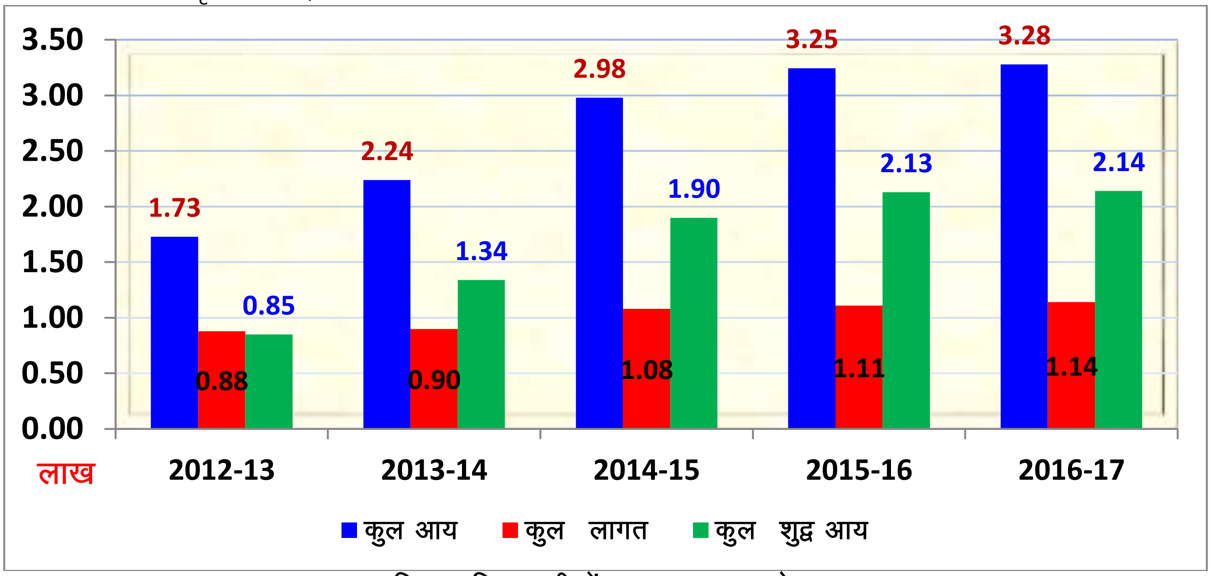


समन्वित कृषि प्रणाली में फसल उत्पादन से आय

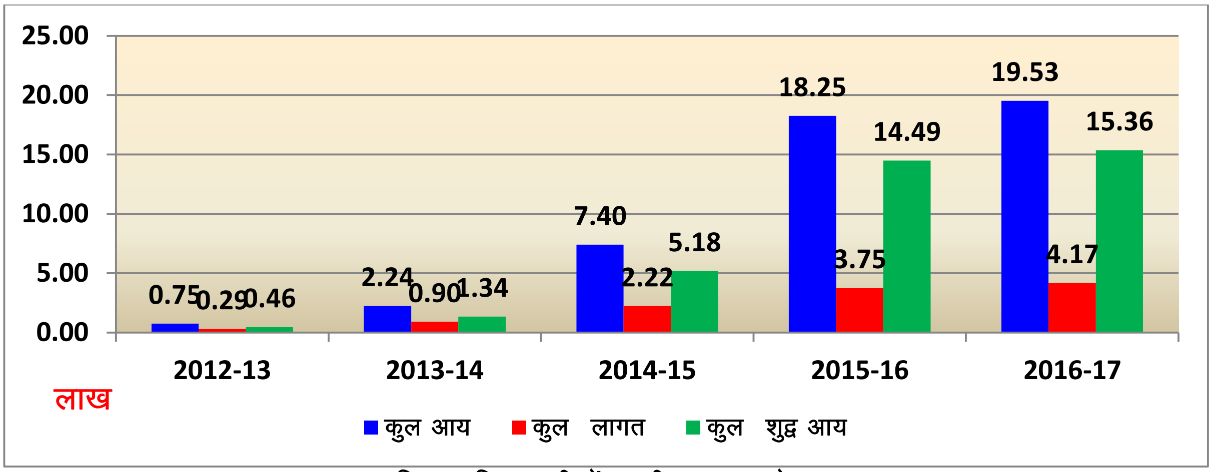


समन्वित कृषि प्रणाली में सब्जी उत्पादन से आय

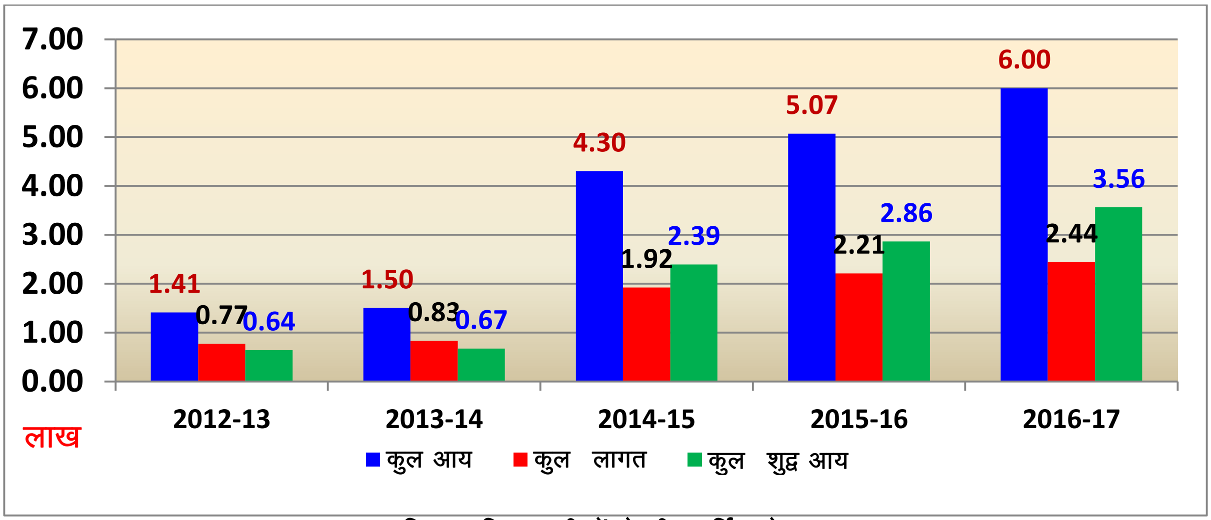


समन्वित कृषि प्रणाली में डेयरी फार्मिंग से आय

इस प्रकार संमन्वित कृषि प्रणाली (फसल + सब्जी उत्पादन + डेयरी फार्मिंग) से 7 हैक्टर क्षेत्रफल से वर्ष 2016–17 में 21.06 लाख रूपयें प्राप्त हुई जबकि वर्ष 2012–13 में असंमन्वित कृषि से 7 हैक्टर क्षेत्रफल से 4 लाख रूपये की आय थी।

वर्तमान में श्रीमति शांता पटेल के द्वारा विकसित अन्तराशस्य पद्वति व रेज बैड़ नर्सरी प्रणाली का उपयोग अन्य किसान सब्जियों की खेती में करने लगे है। जिले में करीब 125–150 कृषक व कृषक महिलाओं ने शांता पटेल से प्ररित होकर समन्वित कृषि प्रणाली अपना चुके है। समय–समय पर उनको सलाह भी देती है। इनकी सामाजिक व आर्थिक स्तर में वृद्धि हुई है तथा विभिन्न संस्थाओं में भागीदारी का मौका मिला रहा है। पारिवारिक सुख सुविधाओं में भी वृद्धि कर पक्का मकान, कार, ट्रेक्टर, गोदाम, भूमि का समतलीकरण, जल संधारण इत्यादि का निर्माण किया गया।

**इनके समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल एवं नवाचारों से प्रभावित होकर दुरदर्शन चैनल ने श्रीमति शांता पटेल को दुरदर्शन–महिला किसान अवार्ड के लिए प्रतिभागी के रूप में नई दिल्ली बुलाकर रिकोर्डिंग की गई। दुरदर्शन–महिला किसान अवार्ड के लिए देश की 111 प्रतिभागी महिला कृषकों में चयन किया गया।**

### 3. प्रतापधन ने बनाया धनवान

**नाम– खुमानसिंह पिता नारायणसिंह**

**ग्राम– माडाटेम्बा, तहसील बिछीवाड़ा, जिला– डूॅंगरपुर**

**उम्र– 35 वर्ष**

**शिक्षा– 12वीं,**

**मो.नं. – 9983467588**

माडा निवासी श्री खुमानसिंह पिता नारायणसिंह वर्ष 2013 में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये एवं इन्होने अपनी आर्थिक थिति एवं हुनर के बारे में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को बताया तथा केन्द्र से 3 दिवसीय प्रशिक्षण लिया। तत्पश्चात् सितम्बर 2014 में कृषि विाान केन्द्र द्वारा श्री खुमानसिंह को 20 मुर्गीयों की एक इकाई प्रदान की गई। 4 माह बाद मुर्गीयों ने अण्डा देना शुरू कर दिया इससे 15 रूपये प्रति अण्डे की दर से 375–400 रूपये प्रतिदिन अण्डो से कमाये। इसी प्रकार बायलर बेचने से भी प्रति बायलर 900–1200 रूपये कमाये। इस प्रकार खुमानसिंह ने मुर्गीपालन इकाई बायलर द्वारा 15000 एवं अण्डो द्वारा करीबन 56250 रूपये कमाये।

आर्थिक गणना

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आय 1 | अण्डो द्वारा | | | |
| | 25 अण्डे प्रतिदिन 15 रू. प्रति अण्डा | = 25×15 | = | 375 |
| | | 30×375 | = | 11250 |
| | 5 माह | = 11250×5 | = | 56250 |
| आय 2 | ब्रायलर द्वारा | | | |
| | 15 ब्रायलर बेचे प्रति ब्रायलर 1000/– रू. | 15×1000 = | | 15000 |
| | कुल आय | = 56250 + 15000= | | 71250 |
| खर्चा | दाना 100 ग्राम प्रति बर्ड | 100×50 | = | 5000 ग्राम (5 केजी.प्रतिदिन) |
| | | 30×5 के.जी. | = | 1.5 क्विं. |
| | पांच माह | 1.50×5 | = | 7.50 क्वि. 20 रू. प्रति किलो |
| | | | = | 15,000 रूपये |
| | शुद्ध आय | = 71250–15000 = | | 56250 |

वर्तमान में 70 पोल्ट्री का समुह कृषक के पास है।

इस प्रकार खुमानसिंह प्रतिवर्ष कृषि के साथ–साथ मुर्गीपालन द्वारा प्रतिवर्ष 50000–60000 कमा रहा है। मुर्गीपालन व्यवसाय द्वारा प्राप्त राशि से इस वर्ष कुंआ खुदवाया है, जो 37 फीट गहरा है एवं 35 फीट चौडा है एवं जिसमें पर्याप्त पानी आया जिससे

अब वह 2 बीघा सब्जी उत्पादन भी कर रहा है तथा खुमानसिंह की सफलता को देखकर 72 कृषकों ने के.वी.के. के माध्यम से यह यूनिट प्रारम्भ की। कृषक खुमानसिंह इस सफलता का श्रेय कृषि विज्ञान केन्द्र परिवार को देता है।

**4. दो सखिया कृषि विज्ञान केन्द्र से सिंलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर बनी आत्मनिर्भर**

| | |
|---|---|
| नाम– ललिता आमलिया, माया रावल<br>ग्राम– बोरी, जिला– डूंगरपुर<br>उम्र– 28, 26 वर्ष<br>शिक्षा– पांचवी, आठवीं | <br>ललिता आमलिया माया रावल |

ललिता आमलिया पांचवी पास, बीपीएल परिवार से है तथा दो बच्चे है। बच्चों की पढ़ाई लिखाई व परिवार का खर्चा इनके पति मेहनत मजदूरी करके कर रहे थे। जब कृषि विज्ञान केन्द्र में सिलाई प्रशिक्षण की सूचना मिली तो प्रशिक्षण लेकर अपना रोजगार शुरू करने का सपना मन से संजोए सिलाई प्रशिक्षण में भाग लिया। उसी प्रकार 26 वर्षीय माया रावल जो कि तलाक शुदा है और अपनी 11 वर्षीय बालिका की पढ़ाई व पालन पोषण की जिम्मेदारी थी। स्वयं माया तथा उसकी बच्ची अपने घर वालों पर निर्भर है। जब प्रशिक्षण की सूचना मिली तो मन में यह सपना लिए की प्रशिक्षण लेकर सिंलाई कार्य शुरू करूगी और अपनी बेटी की पढ़ाई व पालन पोषण बेहतर ढंग से स्वयं करूंगी। प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान ललिता व माया की अच्छी दोस्ती हुई। दोनों ने लगन से प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा प्रशिक्षण के समाप्त होने के करीब 15 दिन बाद ही बोरी गांव में किराये की दुकान लेकर सिलाई कार्य प्रारंभ किया। बोरी गांव में पहले से कोई भी सिंलाई की दुकान नहीं थी। ग्रामीण महिलाओं को सिंलाई डूंगरपुर जाना पड़ता था। इसलिये ललिता व माया को आसानी से कार्य मिलने लगा। दोनों सखियों का अच्छा कार्य देखकर महिलायें प्रभावित हुई। और धीरे–धीरे अधिक से अधिक सिलाई का कार्य मिलने लगा। इन वस्त्रों की सिलाई दरें इन्होने डूंगरपुर के मुकाबले कम निर्धारित की जैसे की –

(1) सादा सलवार सूट – 100 रू.

(2) पटियाला व डिजाईन सूट – 130 रू.

(3) छोटी बच्ची का सूट – 90 रू.

(4) सादा ब्लाउज – 35 रू.

(5) अस्तर वाला ब्लाउज – 70 रू.

(6) लेहंगा – 65 रू.

(7) साड़ी फॉल – 25 रू.

ललिता आमलिया ने प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद से लेकर 6 मार्च 2014 तक 100 सादा ब्लाउज, 50 स्तर वाले ब्लाउज, 200 साडी फॉल, 200 लहेंगे व 500 का मरम्मत कार्य किया है उससे करीब 30,000 रू. की आमदनी हुई है। माया रावल का स्वास्थ्य खराब होने की वजह से वह ज्यादा कार्य नहीं कर पायी फिर भी उसने अब तक सिलाई कार्य से लगभग 10000 रू. की कमाई की है। माया ललिता के साथ मिलकर सिलाई कार्य को आगे बढ़ाने में जुठ गई है। दोनों सखियों ने अपने स्वरोजगार प्राप्त करने के सपने को पुरा करते हुए परिवार के आर्थिक स्तर को भी सुधारा है।

## 5. यूरोपियन सब्जियों के उत्पादन से आयी आत्मनिर्भरता

कृषक का नाम : श्री प्रवीण कोटेड

गांव– बटकाफला

ग्राम.पं. बटकाफला(देवल )

तहसील– बिछीवाड़ा, जिला–डूंगरपुर

मों. नं. 7424882068

उम्रः 34 वर्ष

शिक्षा –12 वीं पास

श्री प्रवीण कोटेड पिता श्री शिव राम कोटेड निवासी बटकाफला (देवल) तहसील बिछीवाड़ा जिला डूंगरपुर के सीमान्त जनजाति कृषक हैं। पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं होंने के कारण इनकी शिक्षा 12 वीं उत्तीर्ण हैं। इनके पास स्वयं की 1.0 हेक्टर कृषि योग्य भूमि हैं। पूर्व में परम्परागत तरीके से खेती कर मक्का, धान, गेंहू व चना की स्थानीय किस्मों को उगाकर प्रतिवर्ष लगभग 60,000–70,000 रूपयें की प्राप्त कर रहे थे। जिससे इनकी पारिवारिक आवश्यकताओं की पुर्ति नहीं हो पा रहीं थी। कृषि की नवीन तकनीकियों की जानकारी न होने के कारण पारंम्पारिक तरीके से खेती करने के कारण अधिक लाभ अर्जित नही हों रहा था। पिछले तीन वर्ष पूर्व श्री प्रवीण कोटेड ने कृषि विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों से सम्पर्क कर संस्थागत प्रशिक्षणों में भाग लिया। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोंजित प्रशिक्षण ंजैसे उन्नत फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन तकनिकी, खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, फसलों व सब्जियों में समन्वित पोषक तत्व एवं खरपतवार प्रबन्धन, सब्जियों में कीट रोग प्रबन्धन, जैविक खेती, उच्च तकनीकि बागवानी, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन इत्यादि विभिन्न संस्थागत व असंस्थागत प्रशिक्षणों एवं किसान संगोष्ठियों, प्रक्षेत्र भ्रमण किसान मेला में भाग लेकर कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के मार्ग दर्शन में फसलों व सब्जियों की वैज्ञानिकों तरीके से खेती करना प्रारम्भ किया। इन्होंने अपने खेत पर संकर टमाटर, भिण्डी ,मिर्च व मक्का की संकर किस्मों के प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगायें। इसके साथ–साथ इन्होंने अपने स्तर पर निजी कम्पनी के संकर बीज खरीद कर वैज्ञानिकों की देख–रेख में यूरोपियन सब्जिया जैसे–ब्रोकली, लेट्यूस, सिलेरी, रेड केबेज इत्यादि की सफलतम खेती कर रहें हैं।

इस प्रकार से कृषि विज्ञान केन्द्र के लगातार सम्पर्क में रहकर कृषि के नवाचारों को अपनाया साथ ही केवीके से नवीन तकनीकि अपने खेत पर अपना कर अपने आस–पास के गांवों के दूसरे किसानों को अपने अनुभव साझा करतें हुए नवीनतम कृषि तकनिकी के हस्तान्तरण में मददगार साबित हो रहें हैं।

इन्होंने जिला कृषि विभाग के सहयोग से वर्मीकम्पोस्ट इकाई भी स्थापित की है जिसमें प्राप्त वर्मी खाद अपने खेतो में डालकर भूमि की उर्वरा शक्ति बनाऐं रखते हुए जैविक खेती को बढावा दे रहें हैं। एवं अधिशेष वर्मीकम्पोस्ट खाद व केचुए अन्य कृषको को बेचकर आय भी प्राप्त कर रहें हैं।

वर्तमान में नवीन तकनीकियों को अपनाने, अपने प्रयासों, समय–समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र औंर कृषि संबधित विभागों की तकनीकि सलाह के कारण उनकी आय तथा जीवन स्तर में भी वृद्धि हुई हैं।

श्री प्रवीण कोटेड की सफलता को देखकर आस–पास के गांव शिशोद, देवल, भूवाली, गामडी के किसान भी लाभकारी कृषि प्रणालियों की तकनीकि जानकारी के लिए सम्पर्क कर नवीनतम तरीको से उन्नत खेती करके आर्थिक रूप से समृद्व हुये हैं व अपने परिवार का जीवन स्तर भी उपर उठाया हैं।

**उन्नत कृषि प्रणाली से श्री प्रवीण कोटेड की विगत 3 वर्षों की 1.0 हेक्टर से औंसत वार्षिक आय–**

| वर्ष | फसल | सकल आय (रू) | कुल लागत(रू) | शुद्व आय (रू) |
|---|---|---|---|---|
| 2017 | संकर मक्का, टमाटर, धनिया, पालक | 182000 | 105000 | 77,000 |
| 2018 | टमाटर, गोभी, भिण्डी, ब्रोकली, रेड केबेज, लेट्यूस, सिलेरी | 2,45000 | 1,20000 | 1,25000 |
| 2019 | टमाटर, गोभी, भिण्डी, ब्रोकली, रेड केबेज ,लेट्यूस ,सिलेरी , चुकन्दर | 3,20000 | 1,45000 | 1,75000 |

वर्तमान में श्री प्रवीण कोटेड की आर्थिक स्थिति अच्छी हैं तथा उनके खरीदने की क्षमता में भी वृद्वि होने के कारण उन्होंने एक चार पहिया वाहन खरीदा हैं एवं इनके दो बच्चे प्राईवेट स्कूल में पढ रहें हैं। इनके फार्म पर डूंगरपुर जिले के कई कृषक भ्रमण कर चुके हैं एवं इनके आस पास के गांवों के करीब 40 कृषकों ने सब्जियाँ उत्पादन करना शुरू किया है।